International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(4): 207-214

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(4): 207-214
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-05-2019
Accepted: 21-06-2019

कविता शर्मा
व्याख्याता, संहिता एवं सिद्धांत विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्व विद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

डॉ. आयुष कुमार गर्ग
व्याख्याता, द्रव्यगुण विज्ञान विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्व विद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
कविता शर्मा
व्याख्याता, संहिता एवं सिद्धांत विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्व विद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

साहित्य ग्रंथो के निर्माण में संस्कृत भाषा का महत्व

कविता शर्मा, डॉ. आयुष कुमार गर्ग

सारांश
प्रस्तुत लेख मे साहित्य ग्रंथो के निर्माण में संस्कृत के महत्व, उद्धेश्य तथा उसके स्वरुप का उल्लेख किया गया है | संस्कृत भाषा विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है | संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति के विरासत का प्रतीक है तथा संस्कृत भारत को एकता के सूत्र मे बांधती है | आयुर्वेद के अध्ययन के लिए संस्कृत भाषा का प्रामाणिक ज्ञान होना अत्यावश्यक है | संस्कृत भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा का उपयोग हमारे ग्रंथो के निर्माण के लिए किया गया होता तो आज हम इतने बड़े - बड़े ग्रंथो का अध्ययन नहीं कर पाते क्योकि संस्कृत भाषा का हर एक शब्द अपना अर्थ बताता है, वही अन्य भाषाएँ यह करने मे असमर्थ है | संस्कृत भाषा के प्राचीन साहित्य अत्यंत कुशल, वैज्ञानिक, निपुण तथा दार्शनिक है | इस लेख में संस्कृत भाषा की आवश्यकता तथा उत्पत्ति का विख्यात रूप से वर्णन किया गया है तथापि उसे विस्तृत रूप में प्रतिष्ठित किया गया है |

उद्धेश्य
१. संस्कृत भाषा की उत्पत्ति तथा विकास पर प्रकाश डाला गया है |
२. विभिन्न साहित्य ग्रंथो के निर्माण में संस्कृत भाषा के योगदान का विश्लेष्णात्मक अध्ययन किया गया है |

कुट शब्द: साहित्य ग्रंथो, संस्कृत भाषा

प्रस्तावना
संसार की प्राचीन भाषाओ में संस्कृत भाषा प्राचीनतम है, विश्व की समस्त भाषाएँ इसी के गर्भ से उद्भूत हुई है | संस्कृत शब्द की उत्पत्ति सम् उपसर्ग, कृ धातु तथा क्तः प्रत्यय से हुई है| संस्कृत का जननी स्वरुप = यह भाषा संसार की बहुत सी भाषाओं की साक्षात् या परंपरा जननी है, यह भाषा वैज्ञानिको का कथन है | संसार की बहुत सी भाषाएँ संस्कृत के गर्भ से उद्भूत हुई है |

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति के विरासत का प्रतीक है, यह ऐसी भाषा है जो हमारे प्राचीन ग्रंथो में और हमारे धार्मिक, सांस्कृतिक परम्पराओ के रहस्यों को जानने में हमारी मदद करती है | संस्कृत भाषा एक यन्त्र है, महज संवाद का माध्यम नही | संस्कृत एकमात्र भाषा है जिसकी खोज की गई, रचना नही | यह ऐसी भाषा है जिसमें आकृति और ध्वनि का आपस में सम्बन्ध होता है | संस्कृत के अध्ययन से हमे मानव इतिहास के बारे में समझने और जानने का मौका मिलता है | संस्कृत का तात्पर्य परिष्कृत, परिमार्जित, पूर्ण एवं अलंकृत है, अलंकार इसका सौंदर्य है, इस भाषा में भाषागत त्रुटियाँ नही मिलती है जबकि अन्य भाषाओ के साथ ऐसा नही है | यह भाषा अखिल भाषाओ की आधारभूत, वैज्ञानिक एवं दोषरहित भाषा है |

विश्व का प्रथम साहित्य 'ऋग्वेद' इसी देववाणी में उपलब्ध है | वेदों की रचना इसी भाषा में होने के कारण इसे "वैदिक भाषा" भी कहते है | ज्ञान एवं विज्ञान की समग्र शाखाएँ संस्कृत साहित्य में प्रचुरमात्रा में उपलब्ध है | भारत की पहली संस्कृत यूनिवर्सिटी १७९१ में वाराणसी में खुली थी | संश्लेषण - विश्लेषण रूप विशिष्टता के कारण अत्युन्नत कंप्यूटर के लिए आज भी संस्कृत भाषा ही सभी अन्य भाषाओँ से अधिक उपयोगी है, ऐसा वैज्ञानिको का कहना है | ज्ञान - विज्ञान के अक्षयनिधि को अपने साहित्यागार में समेटे संस्कृत का महत्व अविदित नही है, यह भाषा संसार की बहुत सी भाषाओँ की साक्षात् या परंपरा जननी है | संस्कृत को इंडो - इरानियन भाषा वर्ग के अंतर्गत रखा जाता है और सभी भाषाओँ की उत्पत्ति का सूत्रधार इसे माना जाता है |

संस्कृत दिवस सावन माह की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है, संस्कृत दिवस की शुरुआत १९६९ में हुई थी | किसी भी भाषा के ज्ञान के लिए व्याकरण का ज्ञान होना नितांत आवश्यक है | व्याकरण भाषा प्रवाह को नियंत्रित करता है तथा उसमे उत्पन्न होने वाले दोषों का निवारण कर भाषा के शुद्ध स्वरुप की रक्षा करता है | संस्कृत का प्राचीन साहित्य अत्यंत प्राचीन, विशाल और विविधतापूर्ण है, इसमें अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान - विज्ञान और साहित्य का खजाना है |

संस्कृतकामहत्व

> "संस्कृता परिष्कृता व्याकरण भाषा परिशुद्धा|"

अच्छी प्रकार से शुद्ध की गई भाषा, परिष्कृत की गई भाषा संस्कृत कहलाती है |

संस्कृत की महत्ता को अन्य भाषा शास्त्रियों ने भी स्वीकार किया है और मुक्त कंठ से कहाँ है कि संस्कृत के समान समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा इस धरती पर कही नही है, अन्य भाषाएँ संस्कृत के शब्द महोदधि से अपनी - अपनी आवश्यकतानुरूप गागर भर कर ले जाती रही है और विकसित हुई है|

संस्कृत भाषा में अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान और साहित्य का खज़ाना है | संस्कृत भाषा के उच्चारण से हमारा मन एकाग्रचित्त और शांतचित्त रहता है | संस्कृत भाषा से हमे उच्चारण स्थान का पता चलता है | संस्कृत में हमे १४ माहेश्वर सूत्रों का पता चलता है | सिर्फ हमे वेद और उपनिषद की जानकारी ही संस्कृत से नहीं मिली, बल्कि ९ ग्रहों, राहू, केतु, धूमकेतु का ज्ञान भी प्राप्त हुआ | संस्कृत में आयुर्वेद चिकित्सा, विमान का रहस्य भी छुपा हुआ है | हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि धर्मो के प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में है | संस्कृत भारत को एकता के सूत्र में बांधती है | संस्कृत भाषा केवल स्वविकसित नहीं अपितु संस्कारित भाषा भी है; अतः इसका नाम संस्कृत है | केवल संस्कृत ही एकमात्र भाषा है, जिसका नामकरण उसके बोलने वालो के नाम पर नही किया गया है |

संस्कृत का प्रयोजन

शब्दों का व्यवस्थित एवं संयोजनपुर्वक सार्थक प्रयोग व्याकरण के माध्यम से ही किया जा सकता

है | जिस भाषा पर व्याकरण का नियंत्रण होता है वह सर्वदा उत्कृष्ट और सुसंस्कृत मानी जाती है | साधुत्व का ज्ञान कराना (वाक्यों को साधु अर्थात् शिष्ट स्वरुप में प्रयुक्त करवाना) ही व्याकरण का प्रमुख उद्धेश्य है -

"साधुत्वज्ञानविषया सैषा व्याकरण स्मृतिः||"

{वाक्यपदीय}

व्याकरण के अनुबंधचतुष्टय (अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन) में प्रयोजन को अभिलक्षित करके ही व्यक्ति विषय की ओर आकृष्ट होता है | व्याकरण का जिज्ञासु ही व्याकरण का अधिकारी होता है, भाषा के तत्व और परिनिष्ठित रूप ही व्याकरण के वर्ण्य विषय है, इन दोनों में परस्पर ज्ञाता एवं ज्ञेय का सम्बन्ध ही सम्बन्ध है तथा इसका व्यवस्थित ज्ञान होना ही प्रयोजन है | प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए पतंजलि ने निर्दिष्टकियाहैकि -

"रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनं|" {महाभाष्य}

1. रक्षा = वेद या शास्त्र की रक्षा के लिए |
2. ऊह = यथास्थान प्रकृति - प्रत्यय आदि के प्रयोग सम्बन्धी ऊह (तर्क) के लिए |
3. आगम = शास्त्र के आदेश की परिपालना के लिए, शास्त्र में कहाँ गया है कि षडंग वेद का अध्ययन करना चाहिए, षडंग में व्याकरण की भी गणना है, अतः व्याकरण का अध्ययन करना आगम - निर्देश का ही परिपालन है |
4. लघु = शब्दों को लघु (संक्षिप्त) स्वरुप में प्रयुक्त करवाने में व्याकरण ही समर्थ है |
5. असंदेह = व्याकरणसम्मत शब्द या वाक्य के प्रयोग से यथोचित अर्थ की प्राप्ति में संदेह नही रहता |

इन पाँचों प्रयोजनों में व्याकरण का महत्व समाहित है | व्याकरण के समुचित ज्ञान के विना अर्थ का अनर्थ हो जाता है | शब्दों की संरचना (प्रकृति, प्रत्यय, विभक्ति, आदि के माध्यम से शब्दसंरचना) और इनका समुचित प्रयोग (संधि, समास, विराम, विस्मयबोधन आदि के माध्यम से) व्याकरण से ही संभव है |

संस्कृत की परंपरा = वैदिक काल से ही संस्कृत को महत्व दिया जाता रहाँ है, षडंग में ज्योतिष को छोड़कर अन्य पाँचो अंग संस्कृत के माध्यम से एक - दुसरे से पूर्णतः सम्बद्ध है और ज्योतिषी में भी संस्कृत की महत्ता को कम कर के नही देखा जा सकता | वैदिक मंत्रो का संस्कृत व्याकरण के अभाव में समुचित उच्चारण और समुचित क्रियापरक उपयोग अनुष्ठानादि के रूप में नही किया जा सकता | यदि मंत्रो का समुचित प्रयोग नही हो तो वे यथोचित परिणाम प्राप्त नही करवाते| कभी - कभी तो विपरीत कार्यरुपी परिणाम भी हो जाता है, जैसे वृत्रासुर ने इंद्र के विनाश के लिए यज्ञ - अनुष्ठान करवाया पर यज्ञकर्ताओ के द्वारा स्वरों के अशुद्ध उच्चारण के कारण स्वयं वृत्रासुर का ही नाश हो गया | जैसे - 'इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व' के स्थान पर 'इंद्रशत्रुर्वधस्य' का प्रयोग हुआ, इसलिए कहाँ गया है कि -

1. "मंत्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह |
   स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेंद्रशत्रुः स्वरतोअपराधात् ||" {पाणिनीय शिक्षा १०/५३}

संस्कृत भाषा के अद्वितीय विद्वान पाणिनि थे, पाणिनि की रचनाओं में अष्टाध्यायी या पाणिनियाष्टक का प्रमुख स्थान है, यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा का अनुपम रत्न है |

जैसे - अवधि, भीली, भोजपुरी, बोडो, छत्तीसगढ़ी, डोगरी, गेह्वाली, हरयाणवी, हिंदी, कश्मीरी, कोंकानी, मगधी, मैथली, मराठी, मुंदरी, नेपाली, पाली, राजस्थानी, संताली, सिन्धी आदि के आलावा लैटिन, जर्मन तथा फारसी में भी संस्कृत भाषाओँ का उपयोग किया गया है |

संस्कृत में दुनिया की किसी भी भाषा से अधिक शब्द है, वर्तमान में संस्कृत के शब्दकोष में १०२

अरब ७८ करोड़ ५० लाख शब्द है |
जैसे - हाथी के लिए संस्कृत में १०० से भी अधिक शब्द उपयोग में लिए जाते है |
निम्न भाषाओँ में संस्कृत के शब्दों का प्रयोग किया गया है जिसे उदाहरण के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है :-

टेबल-1: अन्य भाषाओं में संस्कृत शब्दों का प्रयोग

S.N.	संस्कृत	हिंदी	लैटिन	जर्मन	अंग्रेजी	फारसी
1.	मातृ	माता	मातेर	मुटेर	मदर	मादर
2.	पितृ	पिता	पातेर	फाटेर	ब्रदर	-

संस्कृत	मराठी
१.अंगुष्ठ	अंगठा
२.रात्रि	रात्रि

संस्कृत	गणित
१.त्रिकोणमिति	Trigonometry
२.ज्यामिति	Geometry

संस्कृत में व्याकरण का महत्व =

संस्कृत जैसी विशिष्ट भाषा के ज्ञान के लिए तो व्याकरण का ज्ञान नितांत अपेक्षित है | व्याकरण ज्ञान के बिना कोई पांडित्य प्राप्त नही कर सकता | विश्व के आदि ग्रन्थ वेद है जो सुव्यवस्थित और सुसंबद्ध है, इनमे प्रयुक्त भाषा संस्कृत है | व्यवाहारिक एवम् सैद्धांतिक ज्ञान को अपने आप में समाहित किये हुए, वेदों का सर्वांग्ड़ संपूर्ण ज्ञान करने के लिए व्याकरण का ज्ञान होना सर्वाधिक आवश्यक है | वेदांग्ङ ६ माने गए है - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त तथा ज्योतिष | इन सभी में व्याकरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण हे, क्योकि प्रत्येक विषय की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से होती है | शब्दसमूह सर्वदा वर्णसमूह के रूप में भाषित होते है जो क्रमबद्ध और यथोचित स्वरुप में प्रयुक्त होने पर ही अर्थ की अभिव्यक्ति करते है | यह यथोचित स्वरुप और क्रमबद्धता व्याकरण के द्वारा ही नियंत्रित होते है | क्योकि -

"व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते प्रकृतिप्रत्ययादयो यत्र तद् व्याकरणं |"

इस व्युत्पत्ति से यह स्पष्ट है कि जिसमे शब्दों की प्रकृति और प्रत्यय आदि का विवेचन किया जाये वह व्याकरण है -

वि + कृ + ल्युट् (अन) त्र व्याकरणं |

"मुखं करोति इति व्याकरणं |" {पाणिनिय शिक्षा ८/४२}

मुख से जो उच्चारण किया जाता है, वही व्याकरण है |

आयुर्वेद साहित्य का अध्ययन करने के लिए बी.ए.एम.एस. के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के विषय में संस्कृत के ४ ग्रंथों को सम्मिलित किया गया है तथा इन ग्रंथो का प्रामाणिक ज्ञान होना अत्यावश्यक है |

1. चार कुशल ग्रंथों में प्रथम ग्रन्थ 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' है, यह ग्रन्थ ज्ञान - विज्ञान के अक्षयनिधि को अपने साहित्यागार में समेटे संस्कृत का महत्व अविदित नहीं है | अल्प समय में ही यह ग्रन्थ व्याकरण के सामान्य, किन्तु अत्यधिक उपयोगी नियमो का ज्ञान कराकर संस्कृत पाठको का शास्त्रों में प्रवेश सुघम कर देता हें
2. द्वितीय प्रमुख ग्रन्थ 'वैद्यकीयसुभाषितसाहित्यं' है, संस्कृत एक वैदिक साहित्य विषयक प्रामाणिक ग्रन्थ है, परन्तु वे सब सुभाषित मुख्यतया संस्कृत साहित्य से संकलित किये जाने के कारण और ग्रन्थ का विषय वैद्यक होने के कारण इसके लिए 'साहित्यिकसुभाषितवैद्यकम्' नाम भी उतना ही यथार्थ है | आयुर्वेद केवल आयुर्वेद की चरकादि संहिताओं में मर्यादित नहीं है, उसका व्यवहारिक स्वरुप संस्कृत साहित्य के विविध स्तरों के सब ग्रंथों में बिखरा हुआ है तथा आधुनिक विज्ञानाधिष्ठित स्वरुप आधुनिक पाश्चात्य वैद्यक में प्रतिबिंबित है |
3. तृतीय प्रमुख ग्रन्थ 'पञ्चतन्त्रं' को माना गया है, यह ग्रन्थ कथाओं में उपदेशात्मक विषयों के

समावेश का प्रचलन प्राचीन काल से ही चला आ रहा है | कथाएँ २ प्रकार से प्रचलित है - नितिकथाएँ एवं लोककथाएँ |

नीतिकथाओ में उपदेशात्मक विषयों की प्रधानता रहती है, पुरुषार्थ चतुष्ट्य सम्बन्धी ज्ञान, सदाचार सम्बंधी ज्ञान एवं व्यवहारिक ज्ञान को कथाओं के माध्यम से आसानी से समझाया जा सकता है | ये कथाएँ मनोरंजनशील होने के साथ - साथ नैतिक शिक्षा व व्यावाहारिक ज्ञान प्रदान करने के कारण मनुष्य के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है| प्रसिद्ध इतिहासकार कीथ ने लिखा है कि - "साधारण सी कहानी का एक निश्चित उद्धेश्य के लिए उपयोग में लाया जाना उपदेशात्मक कथा का जीवनोपयोगी ज्ञान समझने की एक निश्चित विधि बन जाना कहानियों के इतिहास में एक स्पष्ट तथा महत्वपूर्ण कदम था|"

4. चतुर्थ प्रमुख ग्रन्थ 'संस्कृत निलयम्' है, राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के माध्यम से संस्कृतज्ञों द्वारा संस्कृत के ग्रंथों को हिंदी में समझाना अकिंचित्कर है, परन्तु लेखक का उद्धेश्य यह है कि आयुर्वेद में प्रवेश लेने वाले विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत भाषा को अधिक सरल, सुबोध एवं रुचिकर बनाना है, जिसे की बहुत क्लिष्ट एवं अरुचिकर समझा जाता है|

संस्कृत का अद्वितय-

- कुछ विद्वानों का यह भ्रम है कि संस्कृत भाषा केवल ग्रंथों की ही भाषा है और इसका अध्ययन केवल पाठ - पाठन में ही उपयोग होता है परन्तु यह उचित नही है क्योकि यास्क के निरुक्त, पाणिनि के अष्टाध्यायी और पतंजलि के महाभाष्य के अध्ययन से यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि उनके समय में संस्कृत दैनिक व्यवहार की भाषा थी | यास्क और पाणिनि ने वेदों की भाषा से इसको पृथक् करते हुए इसको 'भाषा' अर्थात् दैनिक व्यवहार की भाषा कहाँ है|
- शब्द रूप = विश्व की सभी भाषाओँ में एक शब्द का एक या कुछ रूप होते है, जबकि संस्कृत में २७ रूप होते है |
- द्विवचन = सभी भाषाओँ में एकवचन और बहुवचन होते है, जबकि संस्कृत में द्विवचन अतिरिक्त होते है |
- संधि = संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता संधि है | संस्कृत में जब दो अक्षर निकट आते है तो वहां संधि होने से स्वरुप और उच्चारण बदल जाता है |
- शोध से ऐसा पाया गया है कि संस्कृत पढने से स्मरण शक्ति बढती है| संस्कृत वाक्यों में शब्दों को किसी भी क्रम में रखा जा सकता है, इससे अर्थ का अनर्थ होने की बहुत कम या कोई संभावना नहीं होती है | ऐसा इसलिए होता है क्योकि सभी शब्द विभक्ति और वचन के अनुसार होते है और क्रम बदलने पर भी सही अर्थ सुरक्षित रहता है |

  जैसे = अहम् गृहम गच्छामि |

  गच्छामि गृहम अहम्; दोनों ही सही है |
- यदि इच्छा शक्ति हो तो संस्कृत को हिब्रू की भाँति पुनः प्रचलित भाषा भी बनाया जा सकता है | संस्कृत विश्व की सर्वाधिक पूर्ण एवं तर्कसम्मत भाषा है | संस्कृत ही एकमात्र साधन हे जो क्रमशः अँगुलियों एवं जीभ को लचीला बनाते है | इसके अध्ययन करने वाले छात्रों को गणित, विज्ञान एवं अन्य भाषाएँ ग्रहण करने में सहायता मिलती है | इसके अध्ययन से ज्ञान - विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति को बढ़ावा मिलेगा | संस्कृत केवल एकमात्र भाषा नही है, अपितु संस्कृत एक विचार है ; संस्कृत एक संस्कृति है, एक संस्कार है, संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शान्ति है, सहयोग है, समृद्धि है, वसुद्धैव कुटुम्बकम् की भावना है| |

  किसी ओर भाषा के मुकाबले संस्कृत में सबसे कम शब्दों में वाक्य पूरा हो जाता है, संस्कृत

दुनिया की अकेली ऐसी भाषा है जिसे बोलने में जीभ की सभी मांसपेशियों का इस्तेमाल होता है |

- अमेरिकन हिन्दू यूनिवर्सिटी के अनुसार संस्कृत में बात करने वाला मनुष्य बी.पी. (उच्च रक्तचाप), मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल आदि रोग से मुक्त हो जायेगा | संस्कृत में बात करने से तंत्रिका - तंत्र सक्रिय रहता है जिससे कि व्यक्ति का शरीर सकारात्मक आवेश के साथ सक्रिय हो जाता है | कर्नाटक के मुत्तुर गाँव के लोग केवल संस्कृत में ही बात करते है | सुधर्मा संस्कृत का पहला अखबार था जो १९७० में शुरू हुआ था | कंप्यूटर द्वारा गणित के सवालों को हल करने वाली विधि यानि अल्गोरिथमस **[algorithms]** संस्कृत में बने है ना कि अंग्रेजी में |
- संस्कृत भाषा एक विश्वव्यापी भाषा है; पुनरपि भारत सरकार इस और कोई विशेष ध्यान नही दे रही है | सरकार की ओर से संस्कृत भाषा को अधिक से अधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए | विद्यालयों में भी अनिवार्य रूप से अध्ययन अध्यापन होना चाहिए | हम सबको मिलकर यह संकल्प लेना चाहिए कि निकट भविष्य में संस्कृत भाषा का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करेंगे तभी हम भारत के भाषा सम्बन्धी प्रांतीयता आदि के कलह को दूर भगा सकते है तभी हम संसार में विश्व शान्ति की स्थापना कर सकते है | इसके प्रति जनमानस में जागृति लाने की इस विरासत को हमे पुनः शिरोधार्य करना होगा, तभी इसका विकास एवं उत्थान संभव है |
- संस्कृत एक ऐसी भाषा हे जो हमे कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा ज्ञान नियुक्त कराती है |

  जैसे - "शरीरेन्द्रियसत्वात्म संयोग" ही आयु है | इनमे आयु की अभिव्यक्ति का मूर्तिमंत स्वरुप शरीर है ये सभी शरीर से सम्बद्ध है | मनुष्य का जन्म शरीर के रूप में होता है तथा इन्द्रिय और सत्वात्म संयोग को ये शरीर ही विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है | इन सभी क्रियाओं में पंचेन्द्रियार्थो [शब्द - स्पर्श - रूप - रस - गंध] के ज्ञान की अभिव्यक्ति प्रमुख है जो इन्द्रियों के माध्यम से होती है | यद्यपि ये पाँचों अर्थ ही महत्वपूर्ण है पर दैनिक क्रिया व्यापार में शब्द की अभिव्यक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होती है | प्रत्येक प्राणी उच्चारण मुख द्वारा करता है, मनुष्य के मुख द्वारा उच्चारण किये गए शब्द के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध स्वरुप को 'भाषा' नाम से संबोधित किया गया है, इसी प्रकार संस्कृत भाषा अल्प शब्दों में अधिक ज्ञान संबोधित करती है |

  शरीरेन्द्रिय = शरीर + इन्द्रिय, प्रयुक्त पद की गुण संधि करके दो पदों में विच्छेदित किया गया है; अर्थात संधि - विच्छेद करके २ विभिन्न पद बने | जिसमे पहला पद शरीर है, यहाँ शरीर से तात्पर्य एक प्रकार की बनावट से है जो सभी अंगो को धारण किये हुए है, जिसमे आत्मा निवास करती है तथा इन्द्रिय से तात्पर्य उन अंगो से है जो किसी भी वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान करवाती है |

  "अथातो दीर्घाञ्जीवितीयमध्यायं व्याख्यास्यामः|" {च.सू.१/१}

  चरक संहिता सूत्रस्थान के प्रथम अध्याय के प्रथम श्लोक को आचार्य चक्रपाणि ने वर्णित किया है | संस्कृत के महत्व को स्पष्ट रूप से बताते हुए आचार्य चक्रपाणि ने इस श्लोक को अष्टपदात्मक बताया है, जिसका अर्थ यह है कि अष्ट विभिन्न शब्दों तथा पदों के रूप में रचना करना; जो कि निम्न है:-

  अथ + अतः + दीर्घ + जीवितय + अध्यायं + वि + आ + ख्यास्यामः,

  इन अष्टपदो की संस्कृत व्याकरण की सहायता से संधि करके हर शब्द या पद के अर्थ को आसानी से समझा जा सकता है | अतः किसी भी शब्द को आसानी से समझने के लिए उसकी संधि कर विभिन्न पदों में विच्छेदित कर उस पद का अर्थ समझा जा सकता है |

यदि हम इस पद की संधि नही करते तो हम इस पद को समझने में असमर्थ होते तथा किसी संस्कृत शब्द को समझने के लिए उसकी संधि करना अत्यावश्यक है |

निष्कर्ष

वर्तमान समय में प्रचलित एवं उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ एवं शताब्दी के मध्य तक लिखे गए सभी ग्रन्थ जो आयुर्वेद की विभिन्न विषयों को समग्ररूप से या पृथक - पृथक रूप से प्रतिपादित करते है, वे सभी ग्रन्थ संस्कृत में है | चरक का प्रतिसंस्कार एवं इनकी टीकाएँ व्याकरण के ज्ञान के बिना संभव नही थी | आयुर्वेद का ज्ञान यदि मौलिक रूप से करना है तो मूल ग्रंथो और उनकी टीकाओ को पढना आवश्यक है और यह तभी संभव है जब संस्कृत व्याकरण का पर्याप्त ज्ञान हो | यदि अष्टाध्यायी और सिद्धान्त्कौमुदी के अध्ययनपूर्वक व्याकरण का ज्ञान न भी किया जाये तो लघुसिद्धान्त्कौमुदी के स्तर का व्याकरण ज्ञान होना परमावश्यक है | इसीलिए भारतीय केन्द्रीय चिकित्सा परिषद ने बी.ए.एम.अस. के पाठ्यक्रम मे लघुसिद्धान्तकौमुदी को रखा है | लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि उसका व्यवस्थित अध्ययन ना करके छात्र केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने जेसे अध्ययन तक येन - केन - प्रकारेण सिमित रह जाते है | इसके अनेक कारण हो सकते है ; पर एक कारण यह है कि व्याकरण विषय के विभिन्न प्रकरणो को केवल संस्कृत - साहित्य की दृष्टि से ही देखा गया है, समझा गया और तदनुरूप ही उद्धरण दिए गए ; अतः आयुर्वेद के छात्र व्याकरण की ओर अधिक आकृष्ट नही होते | अष्टाध्यायी से लेकर लघुसिधांतकौमुदी तक व्याकरण की जो पवित्र धारा अनवरत रूप से बहती आ रही है, उसने संस्कृत साहित्यारुपी सागर में रहने वाले प्रत्येक प्राणी को पवित्र और सुसंस्कृत बनाया है |

आज भी जिज्ञासुओ कि कमी नही और युगानुरूप सन्दर्भ में पृथक् - पृथक् दृष्टिकोण और भिन्न - भिन्न भाषाओ के माध्यम से उनकी जिज्ञासा को शांत करने के प्रयासों में भी कमी नही है |

वर्तमान समय में विश्व में अत्यधिक प्रयोग में ली जाने वाली आंग्ल (अंग्रेजी) भाषा है जो कि संस्कृत के गर्भ से उद्भूत हुई है | भारत में भी अंग्रेजी भाषा का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया जाता है तथा संस्कृत भाषा मात्र १० प्रतिशत लोगो द्वारा उपयोग की जाती है ; यह हमारे लिए अत्यंत चिंतनीय विषय है | हम हमारी प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति को भूलकर विदेशी सभ्यता की ओर आकर्षित हो रहे है | यदि हमने हमारी प्राचीन सभ्यता को सतत निरंतर नही रखा तो हमारी अत्युत्तम तथा श्रेष्ठ देवभाषा लुप्त हो जाएगी|

सन्दर्भ

1. संस्कृतायुर्वेदासुधा ग्रन्थ के लेखक प्रो. बनवारीलाल गौड़ है | इस ग्रन्थ के संस्करण का पुनर्मुद्रण, २०१३ में हुआ है | इस ग्रन्थ का प्रकाशन चोखम्भा ओरियन्टालिया द्वारा वाराणसी मे किया गया है | इस ग्रन्थ के कुछ मुल बिंदु इस लेख मे उपयोग किये गये है वह पृष्ठ संख्या **(7), (8), (9), (21)** तथा **(22)** पर उपस्थित है |
2. ग्रन्थ लघुसिद्धान्तकौमुदी के व्याख्याकार डॉ. अर्कनाथ चौधरी है | इस ग्रन्थ का नूतन संस्करण २०१६ में हुआ है | इस ग्रन्थ का प्रकाशन जगदीश संस्कृत पुस्तकालय द्वारा जयपुर में हुआ है | इस लेख में उपयोग किये गए मूल बिंदु पृष्ठ सं. **(iii)** पर स्थित है |
3. वैद्यकीयसुभाषितसाहित्यम् ग्रन्थ के संकलनकर्ता एवं व्याख्याकार डॉ. भास्कर गोविन्द घाणेकर है | इस ग्रन्थ के संस्करण का पुनर्मुद्रण, २०१६ में हुआ है | चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी द्वारा इस ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है | इस लेख के मूल बिंदु पृष्ठ सं (१४) पर स्थित है |

4. पंचतन्त्रम् ग्रन्थ के व्याख्याकार डॉ. श्रीराम कुमावत है | इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण २०१६ में प्रतिष्ठित हुआ है | इस ग्रन्थ का प्रकाशन जगदीश संस्कृत पुस्तकालय द्वारा जयपुर में हुआ है | इस लेख के मूल बिंदु पृष्ठ सं (**v**) पर उपलब्ध है |
5. संस्कृत निलयं ग्रन्थ की लेखिका डॉ. त्रिवेणी शास्त्री है | इस ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण २०१७ में प्राप्त हुआ है | जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर द्वारा इस ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है |
6. वाक्यपदीयम् ग्रन्थ के रचयिता प्रो. हरिनारायण तिवारी है | इस ग्रन्थ का संस्करण २०१५ में हुआ है | इस ग्रन्थ का प्रकाशन चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी में हुआ है |
7. पाणिनीय शिक्षा ग्रन्थ के रचयिता शिवराज आचार्य: कौण्डिन्नयायनः है | इस ग्रन्थ का संस्करण २०१४ मई हुआ है | इस ग्रन्थ का प्रकाशन चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी में हुआ है |
8. रचनानुवादकौमुदी ग्रन्थ के लेखक डॉ. कपिलदेव त्रिवेदी है | इस ग्रन्थ का ४२वा संस्करण २०१६ में प्राप्त हुआ है | इस ग्रन्थ का प्रकाशन विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा हुआ है | इस लेख के मूल बिंदु पृष्ठ सं. १० पर स्थित है |
9. चरक संहिता के लेखक डॉ. ब्रह्मानंद त्रिपाठी है| इस ग्रन्थ का संस्करण २०१४ में हुआ है | इस ग्रन्थ का प्रकाशन चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन द्वारा वाराणसी में किया गया है | प्रस्तुत लेख में चरक संहिता सूत्रस्थान के प्रथम अध्याय का प्रथम श्लोक लिया गया है |
10. सुश्रुत संहिता के लेखक डॉ. अम्बिकादत्त शास्त्री है | इस ग्रन्थ के संस्करण का पुनर्मुद्रण २०१५ में हुआ है | इस ग्रन्थ का प्रकाशन चौखम्बा संस्कृत संस्थान द्वारा वाराणसी में किया गया है | प्रस्तुत लेख में सुश्रुत संहिता कल्पस्थान के पंचम अध्याय का त्रयोदश श्लोक लिया गया है|